बनारस जिले के माध्यमिक स्तर के अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन

सकीब अहमद अंसारी
पी-एच.डी. शोध छात्र,
डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय,
इंदौर (म.प्र.)

डॉ. (श्रीमती) दिव्या विजयवर्गीय
सहायक प्राध्यापिका एवं शोध निर्देशिका,
डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय,
इंदौर (म.प्र.)

शोध सार

शोध अध्ययन का उद्देश्य " अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांकों की तुलना करना" था। शोध अध्ययन की परिकल्पना "अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है" थी। बनारस जिले के माध्यमिक स्तर के चार-चार अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों में से कक्षा आठवीं के समस्त विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया था। न्यादर्श में कुल 660 विद्यार्थियों का चयन याद्दच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया था। जिसमे अनुदानित विद्यालयों से 331 विद्यार्थियों एवं गैर अनुदानित विद्यालों से 329 विद्यार्थियों का चयन किया गया था। विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता के आकलन हेतु मानकीकृत शैक्षणिक चिंता मापनी के हिंदी संस्करण का उपयोग किया गया था। मापनी का विकास सिंह एवं सेन गुप्ता (2010) द्वारा किया गया था । इस मापनी की विश्वसनीयता परीक्षण-पुन परीक्षण एवं अर्ध विछेदन विधि द्वारा स्थापित की गयी थी। जिसका मान क्रमशः 0.60 एवं 0.65 था। मापनी की वैधता निकष वैधता विधि द्वारा प्रतिस्थापित की गयी थी। जिसका सह सम्बन्ध गुणांक का मान 0.57 था। प्रदत्तों का विश्लेषण स्वतंत्र 'टी' परीक्षण के द्वारा किया गया था। शोध के निष्कर्ष थे। (1) अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का माध्य फलांक 27.49 है, जो कि गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांक 26.53 से सार्थक रूप से उच्च नहीं है। (2) अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता सामान स्तर तक पायी गयी है।

सूचक शब्द : बनारस, माध्यमिक स्तर, अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालय, शैक्षणिक चिंता

प्रस्तावना

चिंता एक ऐसी मानसिक स्थिति है,जो निरंतर चला करती है। यह मानव की अनिवार्यता भी है। सामान्यतः मनुष्यों में कुछ सीमा तक चिंताएं अवश्य रहती है।यदि, मनुष्य में किसी बात की चिंता ना रहे तो वह किसी कार्य के संपादक के लिए अभिप्रेरित नहीं होता है। फ्रायड ने चिंता के अचेतन मन के साथ जोड़ा है। उनके अनुसार दमित भावनाएं ही रूपांतरित होकर चिंता के अनेक रूप उत्पन्न करती है। फ्रायड ने इस जीवन शक्ति के साथ संबंध किया है।

फ्रायड (1920) के शब्दों में चिंता रूपांतरित जीवन शक्ति है।अन्य फ्राइड वादी करेन हॉर्नी (1950) के अनुसार मूलभूत चिंता जीवन के प्रारंभ में ही व्यक्ति में उत्पन्न हो जाती है, परंतु विभिन्न व्यक्तियों में उसकी दशाओं के अनुसार मूलभूत चिंता की मात्रा कम या अधिक होती है। कोलमैन (1981) के अनुसार भय और आशंका की सामान्यीकृत अनुभूति ही चिंता है। चिंता आपके शरीर का आपको यह बताने का तरीका है कि वातावरण में कुछ ऐसा है जिस पर आपको ध्यान देने की आवश्यकता है। यह आपके मस्तिष्क और शरीर में जैव रासायनिक परिवर्तनों की एक श्रृंखला है,उच्च स्तर की चिंता एकाग्रता और स्मृति में हस्तक्षेप करती है, जो शैक्षणिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं। हालाँकि, बिना किसी चिंता के, हममें से अधिकांश को परीक्षा के लिए अध्ययन करने, पेपर लिखने या दैनिक होमवर्क करने की प्रेरणा की कमी होगी। चिंता की एक मध्यम मात्रा वास्तव में प्रेरणा पैदा करके शैक्षणिक प्रदर्शन में मदद करती है। शैक्षणिक चिंता के चार घटक हैं - चिंता, भावनात्मकता, कार्य-जनित हस्तक्षेप, और

अध्ययन कौशल की कमी। चिंता ऐसे विचार जो आपको शैक्षणिक कार्य पर ध्यान केंद्रित करने और उसे सफलतापूर्वक पूरा करने से रोकते हैं। उदाहरण के लिए, विफलता की भविष्यवाणियाँ, आत्म-अपमानजनक विचार, या ख़राब काम करने के परिणामों के बारे में चिंता करना। भावुकता चिंता के जैविक लक्षण हैं। उदाहरण के लिए, तेज़ दिल की धड़कन,पसीने से तर हथेलियाँ, मांसपेशियों में तनाव। कार्य- जनित हस्तक्षेप से तात्पर्य कार्य से संबंधित व्यवहार है जो अनुत्पादक हैं और सफल निष्पादन को रोकते हैं। उदाहरण के लिए,किसी परीक्षा के दौरान लगातार घड़ी की जाँच करना, या किसी परीक्षण प्रश्न पर बहुत अधिक समय व्यतीत करना जिसका आप उत्तर नहीं दे सकते। अध्ययन कौशल की कमी अर्थात आपके वर्तमान अध्ययन तरीकों में समस्याएं जो चिंता पैदा करती हैं। उदाहरण के लिए, अंतिम समय में रटने के कारण परीक्षण प्रश्नों के उत्तर नहीं पता होना या व्याख्यान के दौरान खराब नोटिंग के कारण किसी बड़े असाइनमेंट के बारे में भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है। कई छात्र अध्ययन कौशल की कमी के परिणामस्वरूप शैक्षणिक चिंता के पहले तीन घटकों का अनुभव करते हैं।

अध्ययन का औचित्य

वितसरी (2010) ने अपने शोध में पाया कि विश्वविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थी अध्ययन सम्बन्धी चिंता से ग्रसित रहते है। चमन एवं शर्मा (2016) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि शैक्षिक चिंता में लिंग एवं आवासीय पृष्ठभूमि निर्धारक तत्व नहीं है। खेमका एवं राठौर (2016) ने अपने शोध में यह ज्ञात किया कि माध्यमिक स्तर की छात्राओं को छात्रों की तुलना में अधिक शैक्षिक चिंता होती है। अजीम (2018) ने यह निष्कर्ष दिया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों कि शैक्षिक चिंता में लिंग तथा धर्म का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। साहू एवं पांडेय (2020) ने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड.के विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता समान स्तर तक पायी गयी। साहू, श्रीवास्तव एवं शर्मा (2022) ने यह ज्ञात किया कि, किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। अशासकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों में शासकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में अधिक शैक्षिक चिंता पायी गयी एवं शैक्षिक चिंता में लिंग कोई करक निर्धारण तत्व नहीं है। पूर्व में किये गए इन अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि, लिंग,आवासीय पृष्ठभूमि एवं धर्म के आधार पर तो शैक्षिक चिंता पर अध्ययन किया गया है, किन्तु विद्यालय प्रकार के साथ शैक्षिक चिंता पर एक ही अध्ययन किया गया है। बनारस के सन्दर्भ में अभी तक किसी भी शोधार्थी द्वारा इस प्रकार का अध्ययन नहीं किया गया है। अत: शोधार्थी द्वारा इस क्षेत्र में शोध कार्य करने की आवश्यकता महसूस की गयी।

उद्देश्य

शोध अध्ययन के उद्देश्य था।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांकों की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ

शोध अध्ययन की परिकल्पना थी।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध प्रविधि : शोध की प्रकृति सर्वेक्षणात्मक थी।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए समिष्ट बनारस जिले के माध्यमिक स्तर के समस्त अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालय थे। उक्त विद्यालयों में से चार-चार अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया था। उक्त आठ विद्यालयों में से कक्षा आठवीं के समस्त विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया था। न्यादर्श में कुल 660 विद्यार्थियों का चयन किया गया था। जिसमे अनुदानित विद्यालयों से 331 विद्यार्थी एवं गैर अनुदानित विद्यालयों से 329 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था

शोध उपकरण

शोध में चयनित चर शैक्षिक चिंता के आकलन हेतु मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया गया था।

शैक्षणिक चिंता मापनी

विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता के आकलन हेतु मानकीकृत शैक्षणिक चिंता मापनी के हिंदी संस्करण का उपयोग किया गया था। मापनी का विकास सिंह एवं सेन गुप्ता (2010) द्वारा किया गया था मापनी में कुल 20 पद थे। प्रत्येक पद हेतु दो विकल्प हाँ अथवा नहीं दिए गए थे।इन विकल्पों में से विद्यार्थियों को किसी एक विकल्प का चयन करना था। धनात्मक कथनों हेतु हाँ के लिए 01अंक एवं नहीं के लिए 00 अंक प्रदान किये गए थे। इसके ठीक विपरीत ऋणात्मक कथनों हेतु हाँ के लिए 00 अंक एवं नहीं के लिए 01 अंक प्रदान किये गए थे। इस मापनी की विश्वसनीयता परीक्षण-पुन परीक्षण एवं अर्ध विछेदन विधि द्वारा स्थापित की गयी थी। जिसका मान क्रमश: 0.60 एवं 0.65 था। मापनी की वैधता निकष वैधता विधि द्वारा प्रतिस्थापित की गयी थी। जिसका सह सम्बन्ध गुणांक का मान 0.57 था।

प्रदत विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण स्वतंत्र 'टी' परीक्षण के द्वारा किया गया था।

परिणाम एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य "अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांकों की तुलना करना" था। अत: इस उद्देश्य से सम्बंधित प्रदत्तों का विश्लेषण स्वतंत्र 'टी' परीक्षण के द्वारा किया गया। इसके परिणाम तालिका 1 में प्रस्तुत किये गए है।

तालिका 1: विद्यालयीनवार शैक्षिक चिंता के न्यादर्श, माध्य, मानक विचलन एवं टी मान

विद्यालय प्रकार	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	टी मान
अनुदानित	331	27.49	6.62	1.80
गैर अनुदानित	329	26.53	7.03	

तालिका 1 से विदित है कि 'टी' का मान 1.80 है, जबकि df=658 है। जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे यह ज्ञात है कि अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अत: शून्य परिकल्पना कि "अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है" को निरस्त नहीं किया जा सकता है।

रेखा चित्र 1 : अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों
की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांक

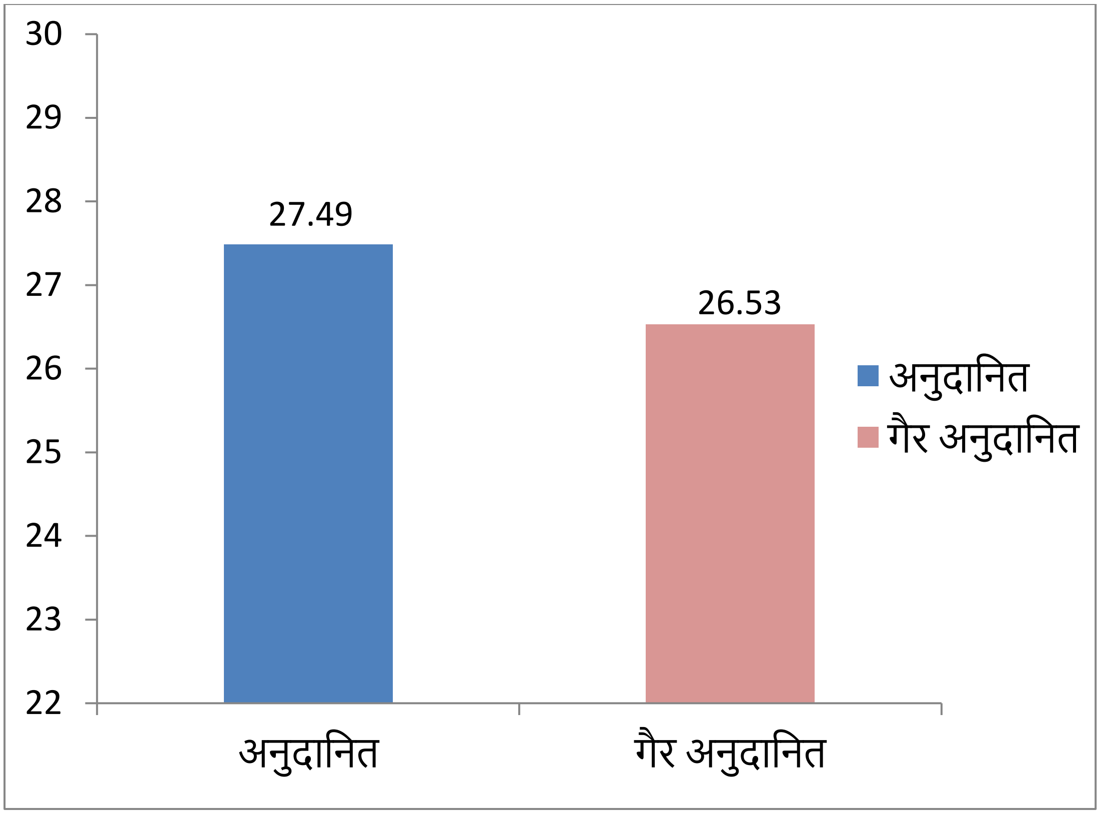

तालिका 1 एवं रेखा चित्र 1 से यह भी विदित होता है कि अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का माध्य फलांक 27.49 है, जो कि गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांक 26.53 से सार्थक रूप से उच्च नहीं है। अत: इससे यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता सामान स्तर तक पायी गयी है।

निष्कर्ष एवं चर्चा

शोध के निष्कर्ष थे (1) अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का माध्य फलांक 27.49 है, जो कि गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के माध्य फलांक 26.53 से सार्थक रूप से उच्च नहीं है। (2) अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता सामान स्तर तक पायी गयी है। इस निष्कर्ष की पृष्ठभूमि में यह कारण हो सकता है, कि सामन्यत: चिंता एक ऐसा चर है जो कि प्रत्येक मनुष्यों में स्वभावगत पाया जाता है। इसी कारण अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता में अंतर नहीं पाया गया। विद्यालय का प्रकार इस हेतु कोई कारक घटक नहीं हो सकता है, किन्तु साहू, श्रीवास्तव एवं शर्मा (2022) के अनुसार अशासकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों में शासकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में अधिक शैक्षिक चिंता पायी गयी थी।

सन्दर्भ

पाठक, पी.डी. (2013), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा,

साहू, बी.आर. एवं पांडेय, एन. (2020). शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड.प्रशिक्षणार्थियों के अंग्रेजी एवं हिंदी भाषा के समन्वित परीक्षा पद्धति सम्बंधित शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन, 7(12), 1123-1129

साहू, एन., श्रीवास्तव एन. एवं शर्मा पी. (2022). किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 10(9), b871-b878